Vol 5 Issue 8 Sept 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 8 | Sept - 2015

"आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द के नाद संबंधी विचार"

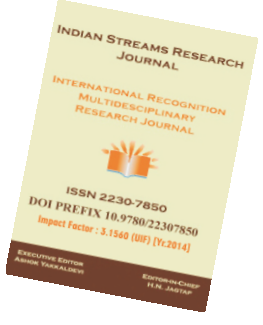

'धीरेन्द्र सिंह एवं जितेन्द्र कुमार शर्मा
'शोधार्थी, दर्शनशास्त्र, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)
एसोशियेट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)

सारांश –

नादब्रह्म, शब्दब्रह्म का योग का शास्त्रों में विशेष वर्णन है। नाद, ब्रह्म से संगीत उपजा, सात स्वरों का आविर्भाव हुआ, यही सात लोक हैं। शब्द ब्रह्म में जप–नामोच्चार का प्रकरण आता है। यह सारा परिकर नाद योग से ही आविर्भूत हुआ है। उसमें प्रकारान्तर से हर क्षेत्र की ऋद्धियों और सिद्धियों का समावेश है। स्वामी विवेकानन्द ने परमहंस के उस सिद्धांत को सर्वत्र प्रचारित किया है जिसमें कहा गया है कि ''सर्वधर्म समन्वय। वेद का प्रथम सूत्र है–''नर नारायण की सेवा।'' राष्ट्र तथा समाज की उन्नति और कल्याण के लिए सबसे अधिक आवश्यक है कि देशवासी 'मनुष्य' बनें। वे बराबर भगवान से यही प्रार्थना करते थे ''भगवान् मेरे देश के निवासियों को मनुष्य बनाओ।''

मुख्य शब्द – स्वामी विवेकानन्द, नाद एवं योग साधना।

प्रस्तावना –

भारतीय नवजागरण के आन्दोलन के सूत्र धारों में स्वामी विवेकानन्द का नाम व स्थान प्रमुख है। उन्होंने भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी आध्यात्मिकता एवं भारतीय धर्म संस्कृति का प्रचार प्रसार किया। उन्होंने अपने गुरू से प्राप्त आध्यात्मिक साधना के माध्यम से धर्म जगत् के एक नवीन द्वार का उद्घाटन किया। उन्होंने लोगों को बताया कि इस संसार में सबसे ऊपर मनुष्य है। उन्होंने मुक्ति साधना का एक नया पथ पराधीन भारतवासियों को दिया। विश्व–बन्धुत्व तथा मानव–सेवा का सर्वप्रथम बीज बोने वाले नरेन्द्र नाथ ही थे जिन्होंने प्रत्येक मानव को शिव के रूप में देखा। अधिकांश विद्वानों का कहना है कि भारत ने भगवान बुद्ध के उपदेशों और विचारों की उपेक्षा की है, इसलिए आज ही नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अगर हम बुद्ध के आदर्शों को अपनाये रहते तो यह दिन देखना पड़ता। बुद्ध ने सोये हुए भारतवासियों को जगाया था। शायद यह बात सही हो। परन्तु बुद्ध के जीवन के बाद जो कार्य स्वामी विवेकानन्द ने किया, अगर हम उस पर ध्यान देते और उनके विचारों को पचाकर उस मार्ग पर चलते तो न केवल समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन होता बल्कि विदेशी दासता से मुक्ति मिल जाती और संसार के उन्नत राष्ट्रों में हमारी गणना होती। नरेन्द्र नाथ ने कहा–संसार के इतिहास का पर्यालोचन करो तो जहाँ कहीं भी किसी महान् आदर्श का संधान मिले तेा समझ लो उसका जन्म भारतवर्ष में हुआ था। अतीतकाल से भारत–भूमि मानव–समाज के लिए अमूल्य भावों की खान बनी हुई है।

स्वामी विवेकानन्द कहा करते हैं–''शरीर और आत्मा मिलकर मनुष्य बनते हैं। शरीर तुच्छ नहीं है, शरीर आत्मा का मंदिर है। सुंदर मंदिर में सुंदर विग्रह के रहने पर सोने पर सुहागा होता है। इसलिए शरीर–मंदिर को स्वच्छबनाओ। हमारे पूर्वज कह गये हैं–''शरीरमाद्यं खलु धर्मासाधनम्'' देह मन्दिर और विग्रह आत्मा है।आत्मा ही ईश्वर है। आत्मा के प्रति अविश्वास का अर्थ है नास्तिकला।''

विश्लेषण – नरेन्द्र के पूर्व जन्म के संस्कार भी साधक के रहे होंगे। यह इसी बात से विदित होता है कि एक बार बाल्यावस्था में नरेन्द्र तथा साथी एक दिन खेल रहे थे, तभी नरेन्द अपने शरीर पर राख लगाकर ध्यान में बैठ गये। तभी एक बच्चे ने साँप–साँप चिल्लाना शुरू कर दिया। सभी बच्चे डरकर घर की तरफ भाग गये और नरेन्द्र के परिवार के लोगों को बुला लाये। काफी देर शोर–गुल हुआ इतने पर भी बालक नरेन्द्र ध्यान में बैठे रहे। जब सांप चला गया तब ध्यान से उठ जाने पर परिवार के लोगों ने नरेन्द्र से पूछा तो उन्होंने कहा कि मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं तो ध्यान की अवस्था में या। बचपन से ही नरेन्द्र, साधु–सन्यासियों को देखकर खुश हुआ करते थें

जब वह पांच वर्ष के थे, तब इनकी शिक्षा प्रारम्भ हुई। यह अत्यंत ही कुशाग्र वृद्धि के कारण सभी विषयों को आसानी से ग्रहण कर लेते थे। 14 वर्ष की आयु में बीमारी के कारण यह अपने पिता के पास मध्य प्रदेश (रायपुर) में आकर रहने लगे। इनके पिता किताबी शिक्षा के साथ व्यवहारिक शिक्षा भी इन्हें देते रहते थे। 2 वर्ष रायपुर रहने के पश्चात् वह वापस कलकत्ता आ गये। उन्होंने अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। कालेज में विज्ञान, ज्योतिष, गणित, दर्शन भारतीय तथा यूरोपीय भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त कर उन्होंने सभी को चकित कर दिया। उन्होंने वेदान्त के साथ–साथ दूसरे आध्यात्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया। 17–25 वर्ष की आयु तक वे सैद्धान्तिक

चिन्तन–मनन में संलग्न रहे किन्तु कोई निश्चित मार्ग नहीं अपना सके। कुछ दिनों तक वे ब्रह्म समाज में अनुयायी रहें। परन्तु यहाँ भी उनकी आध्यात्मिकता की भूख शान्त न हो सकी। काम करते हुए एक बार नरेन्द्र ने महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर से पूछा था–''महाशय क्या आपने ईश्वर को देखा है?

महर्षि इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा, तुम्हारे नेत्र योगियों की तरह हैं। अपने प्रश्न का यह उत्तर पाकर उन्हें बड़ी निराशा हुई। वे ऐसे महापुरुष की तलाश करने लगे जो यह कह सके कि मैंने ईश्वर को देखा है। ब्रह्म समाज के आडम्बर से उनका मन तृप्त नहीं हुआ था। यह संस्था तो केवल समाज–सुधार के लिए सक्रिय रहती है। सत्य–वस्तु की प्राप्ति के लिए कुछ नहीं करती।

रामकृष्ण के सम्पर्क में आने का कारण उनकी ज्ञान–पिपासा थी। जिस प्रकार संसार की समस्त नदियाँ समुद्र से जा मिलती हैं, ठीक उसी प्रकार उन्हें अपने इष्ट से मिलना था। परमहंस जी ने कहा था–'मेरा नरेन्द्र सामान्य मानव नहीं है। वह ब्रह्मलोक का ऋषि है। उसमें वाल्मिकी, बुद्ध, शंकर तथा नेपोलियन की आत्मायें प्रवेश कर गयी हैं।'

उन दिनों स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के प्रति लोगों की बड़ी श्रद्धा थी। नवम्बर, 1880 में इनकी भेंट रामकृष्ण परमहंस जी से पहली बार हुई। पहली ही भेंट में रामकृष्ण परमहंस ने इनको पहचान लिया और इन्हें कहा कि मैं बहुत दिनों से तुम्हारी राह देख रहा था और चाह रहा था कि मैं अपनी आत्मा की आन्तरिक अनुभूतियों को किसी योग्य पात्र को सौंप सकूँ। नरेन्द्र को भी रामकृष्णपरमहंस जी के रूप में सद्गुरु की प्राप्ति हो चुकी थी। नरेन्द्र ने परमहंस जी से निवेदन किया कि मुझे शान्ति चाहिए।

कुछ दिनों पश्चात् नरेन्द्र के पिता की मृत्यु हो गयी और परिवार के भरण–पोषण का दायित्व नरेन्द्र पर आ पड़ा। उन्होंने उसके लिए एक नौकरी भी की। परिवार के दायित्व के साथ–साथ वे परमहंस जी से भी मिलते रहे। परमहंस जी की कृपा से उन्हें समाधि को अवस्था प्राप्त हुई और ईश्वर को साकार रूप में भी ये निर्विकल्प समाधि तक पहुंच गये। इनका अभ्यास और वैराग्य दृढ़ होता चला गया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी ने अपनी मृत्यु से तीन–चार दिन पूर्व स्वामी विवेकानन्द को बुलाकर कहा कि आज से मैंने अपना सब कुछ तुम्हें दे दिया है। आज से इस शक्ति से तुम संसार को बहुत सा हित कर सकोगे और सभी कार्यों को पूरा करोगे।

गुरू जी की मृत्यु के उपरांत वे एक साधना केन्द्र चलाने लगे तथा अपने साथियों और शिष्यों सहित आध्यात्मिक भगवत् भजन में लगे रहे। पांच वर्ष बाद सन् 1891 में वे अपनी मित्र मण्डली को छोड़कर भ्रमण करने के लिए हिमालय की ओर निकल पड़े। वहां विभिन्न सिद्ध महात्माओं के सत्संग से लाभ उठाते हुए चित्त की शुद्धि में लगे रहे। इस समय उनकी वेदांत में दृढ़ आस्था हो गई थी। भारत के विभिन्न प्रान्तों में उनके शिष्यों की संख्या बहुत अधिक हो गयी थी।

बातचीत के सिलसिले में जब खेतड़ी नरेश को यह मालूम हुआ कि वे विदेश जाना चाहते हैं तब उन्होंने सारा प्रबन्ध कर दिया। स्वामी जी लंका, सिंगापुर, हांगकांग, नागासाकी, ओसाका, टोकियों होते हुए कनाड़ा गये और वहा से वे शिकागो पहुँचे। यात्रा में बराबर गुरूदेव का आशीर्वाद मिलता रहा। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे.एच.राइट आपके भाषणों से इतने प्रभावित हुए कि तुरन्त आगामी सितम्बर माह में होने वाली धर्म–सभा में भाषण देने के लिए आपको अवसर दिलाया।

11 सितम्बर 1893 ई. का दिन एक ऐतिहासिक दिन था। उस दिन भारत के इस महान संत ने संसार के सभी धर्म प्रतिनिधियों को हिलाकर रख दिया। सभी देशों के प्रतिनिधि अपना–अपना भाषण लिखकर लाये थे। केवल स्वामी विवेकानन्द ने अलिखित भाषण दिया था।

उन्होंने पाश्चात्य परम्परा के विरुद्ध मेरे अमेरिका निवासी भाईयों तथा बहिनों कहकर जैसे संबोधन किया, वैसे ही हॉल के अधिकांश लोग खड़े होकर इस महान् संत के सम्मान में कई मिनट तक तालियाँ बजाते रहे। अमेरिका के इतिहास में इस प्रकार की पहली घटना थी। तभी लोगों के अन्तर के तार झंकृत हो उठे। विवेकानन्द की वाणी ने कमाल कर दिखाया। इस भाषण में भागवद्गीता और उपनिषदों के ज्ञान का सारांश प्रस्तुत गया। अमेरिका में स्वामी जी के भक्तों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी। वहाँ ये लगभग तीन वर्ष रहे और 16 सितम्बर 1996 में स्वदेश लौट गये। स्वदेश लौटने पर इन्होंने फिर अपना प्रचार कार्य प्रारम्भ किया। इसी बीच उन्होंने दो मठों की स्थापना की।

1 मई 1987 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य था–वेदान्त प्रचार और लोक सेवा। इसी बीच भारत में महामारी का प्रकोप हुआ तो स्वामी जी ने सन्यासियों की एक मण्डली सेवा कार्य में लगा दी। इन्होंने कई अनाथालय और वेदान्त प्रचार के लिए विद्यालय भी खोले।

विदेशों में चलाये गये आन्दोलन की प्रगति को देखने के लिए इन्होंने पुनः पश्चिमी देशों की यात्रा की। इस बार लंदन में रुकते हुए वे अमेरिका पहुंचे। विदेशों में भी विभिन्न नगरों में इन्होंने वेदांत केन्द्र स्थापित किये। इसके एक वर्ष बाद ये वापस भारत आ गये और सांसारिक कार्यों में उदासीन रहने लगे। अत्यधिक परिश्रम के कारण स्वामी जी का स्वस्थ्य बहुत गिर गया। इन दिनों वे अक्सर समाधि में लीन रहते थे। 4 जुलाई सन् 1902 में केवल 39 वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानन्द जी समाधि में रहे, उसके बाद शिष्यों को व्याकरण पढ़ाया एवं वेदोपदेश दिया, फिर भ्रमण पर चले गये। लौटने के कुछ देर बाद माला जपी और फिर समाधि की अवस्था में इस पंचभौतिक शरीर को त्याग दिया। अपने यज्ञ और कार्यों के कारण ये सदा सर्वदा के लिए भारत की धरोहर के रूप में अमर हो गये।

नाद साधना – भारत का परिभ्रमण करते हुए स्वामी विवेकानन्द एक दिन हिमालय में अल्मोड़ा के निकट एक पुरातन वृक्ष के नीचे बैठे और शीघ्र ही गहरे ध्यान में निमग्न हो गये। ध्यान के बाद स्वामी जी ने अपने सहयात्री गुरुभाई स्वामी अखण्डानन्द से कहा, ''सुनो, यहाँ इस पीपल के वृक्ष के नीचे मेरे जीवन की एक सबसे महान् समस्या का समाधान हो गया है।'' इस अनुभूति का उनकी डायरी में उनके द्वारा उस समय लिखा संक्षिप्त वर्णन इसक प्रकार है–

प्रारम्भ में शब्द था, इत्यादि। व्यष्टि ब्रह्माण्ड एक ही योजनानुसार निर्मित है। जिस प्रकार एक जीव एक प्राणयुक्त देह से आवृत है, उसी प्रकार विराट् आत्मा प्राणवन्त दृष्टजगत्–प्रकृति से आवृत है। यह एक (जीव) का दूसरे (प्रकृति) के द्वारा आवृत होना, शब्द और उसको अभिव्यक्त करने वाले भाव के अनुरूप है। वे दोनों एक ही हैं और मानसिक विश्लेषण द्वारा ही उन दोनों का पृथक् ज्ञान सम्भव हैं। शब्द बिना विचार असम्भव हैं। अतः प्रारम्भ में शब्द था, इत्यादि। विश्वात्मा का यह द्विविध रूप अनादि है। अतः हम अनन्त निराकार और अनन्त साकार के इस सम्मिलित रूप को ही देखते अथवा अनुभव करते हैं।

भारतीय दर्शन के अनुसार नाम और रूप ही इस जगत् की अभिव्यक्ति के कारण हैं। मानवीय अन्तर्जगत् में एक भी ऐसी चित्तवृत्ति

नहीं रह सकती, जो नामरूपात्मक न हो। यदि यह सत्य हो कि प्रकृति सर्वत्र एक ही नियम से निर्मित है, तो इस नामरूपात्मकता को समस्त ब्रह्माण्ड का नियम कहना होगा। जैसे मिट्टी के एक पिण्ड को जान लेने से मिट्टी की सब चीजों का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार इस देह–पिण्ड को जान लेने से समस्त विश्व–ब्रह्माण्ड का ज्ञान हो जाता है। रूप, वस्तु का मानो छिलका है और नाम या भाव भीतर का गूदा। शरीर है रूप और मन या अन्तःकरण है नाम, और भाव–शक्ति–युक्त समस्त प्राणियों में इस नाम के साथ उसके वाचक शब्दों का अभेद्य योग रहता है। व्यष्टि–मानव के परिच्छिन्न महत् या चित्त में विचार तरंगे पहले शब्द के रूप में उठती हैं और फिर वाद में वे तदपेक्षा स्थूलतर 'रूप' धारण कर लेती है। बृहद्–ब्रह्माण्ड में भी ब्रह्मा, हिरण्यगर्भ या समष्टि–महत् ने पहले अपने को नाम के, और फिर बाद में रूप के आकार में अर्थात् इस परिदृश्यमान जगत् के आकार में अभिव्यक्त किया। यह सारा व्यक्त इन्द्रियग्राह्य जगत् रूप है, और इसके पीछे है, अनन्त अव्यक्त स्फोट। स्फोट का अर्थ है, समस्त जगत् की अभिव्यक्ति का कारण 'शब्द–ब्रह्म'। समस्त नामों अर्थात् भावों का नित्यसमवायी उपादान–स्वरूप यह नित्य स्फोट ही वह शक्ति है, जिससे ईश्वर इस विश्व की सृष्टि करता है। यही नहीं, ईश्वर पहले स्फोट रूप में परिणत हो जाता है, और तत्पश्चात् अपने को उससे भी स्थूल इन्द्रिय–ग्राह्य जगत् के रूप में परिणत कर लेता है। इस स्फोट का एकमात्र वाचक शब्द हैं, 'ॅ' और चूँकि हम किसी भी उपाय से शब्द को भाव से अलग नहीं कर सकते, इसलिए यह 'ॅ' ही इस नित्य स्फोट से नित्य–संयुक्त है। अतएव समस्त विश्व की उत्पत्ति सारे नामों की जननी स्वरूप इस ओंकार रूप पवित्रतम शब्द से ही मानी जा सकती है।

परमाात्मा से प्रवाहित हो रहा दिव्य संगीत जीव हैं। यह नित्य कृष्ण की वास्तविक वेणु है। परमात्मा से प्रवाहित हो रहा दिव्य संगीत जीव को आनन्द विभोर कर देता है, और उसे आध्यात्मिक चेतना के उच्च स्तरों की ओर ले जाता है। जैसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि – स्पष्ट रूप से उच्चारित जितनी भी ध्वनियाँ है, उनकी उच्चारण क्रिया मुख में जिव्हा के मूल से आरम्भ होती है और ओठों में आकर समाप्त हो जाती है। 'अ' ध्वनि कण्ठ से उच्चारित है और 'म' अन्तिम ओष्ठ्य–ध्वनि है। और 'उ' उस शक्ति का द्योतक है, जो जिव्हा मूल से आरम्भ होकर मुँहभर में लुड़कती हुई ओठों में आकर समाप्त होती है। यदि इस 'ॅ' का उच्चारण ठीक ढंग से किया जाए, तो इससे शब्दोच्चारण की सम्पूर्ण क्रिया सम्पन्न हो जाती है। दूसरे किसी शब्द में यह शक्ति नहीं है। अतएव यह 'ॅ' ही स्फोट का सर्वाधिक उपयुक्त वाचक शब्द है और यह स्फोट ही 'ॅ' ही स्फोट का सर्वाधिक उपयुक्त वाचक शब्द है और यह स्फोट ही 'ॅ' का प्रकृत वाच्य है। और चूँकि वाचक वाच्य से कभी भी अलग नहीं किया जा सकता, इसलिए 'ॅ' और स्फोट अभिन्न हैं। फिर यह स्फोट इस व्यक्त जगत् का सूक्ष्मतम अंश होने के कारण ईश्वर के अत्यंत निकटवर्ती है, तथा ईश्वरीय ज्ञान की प्रथम अभिव्यक्ति है। इसलिए 'ॅ' ही ईश्वर का सच्चा वाचक है।

निष्कर्ष –

उपुर्यक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नाद की साधना का अभ्यास करके व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास करके समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। अर्थात् आरम्भ में शायद कुछ भी सुनाई न पड़े, पर दो–चार दिन प्रयत्न करने के बाद जैसे–जैसे सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय निर्मल होती जायेंगी, वैसे शब्दों की स्पष्टता बढ़ती जायेगी। पहिले–पहिले कई शब्द सुनाई देते हैं। शरीर में जो रक्त प्रवाह हो रहा है, उसकी आवाज रेल की तरह धक्–धक्–धक् सुनाई पड़ती है। वायु के आने–जाने की आवाज बादल गरजने जैसी होती है। ॅ कार ध्वनि जब सुनाई पड़ने लगती है, तो निन्द्रा, तन्द्रा या बेहोशी जैसी दशा उत्पन्न होने लगती है। उसी स्थिति के ऊपर बढ़ने वाली आत्मा परमात्मा में प्रवेश करती जाती है और पूर्णतया परमात्म–अवस्था प्राप्त कर लेती है।

संदर्भ –

1.सत्यार्थ प्रकाश, पृ.15
2.ईस्टर्न एण्ड वेस्टर्न डिसाइपल्स, लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानन्द, पृ.197, 1974
3.विवेकानन्द साहित्य, खण्ड–4, पृ.29–31
4.भागवत मुहुर्त, श्री अरविन्द आश्रम पॉण्डिचेरी
5.माताजी, प्रार्थना और ध्यान, 2004
6.भागवत मुहुर्त, श्री अरविन्द आश्रम पॉण्डिचेरी
7.योग समन्वय, श्री अरविन्द आश्रम पॉण्डिचेरी
8.दि सीक्रेट ऑफ दि वेद, वाल्यू 010, पृ.258
9.बीजक, पृ.12, रैमनी पाँच
10.बीजक, पृ.255, पद 7
11.बीजक, पृ.229, पद 10
12.रहीम ग्रन्थावली, 268 पृ.97
13.रहीम ग्रन्थावली, दोहवली, 96–111
14.रहीम ग्रन्थावली, नगर शोभा, 96–111

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org